रमाकान्त अग्निहोत्री

आखिर हम एक दूसरे की बात समझ कैसे लेते हैं?

अलग शरीर, अलग आँखें, अलग कान और अलग दिमाग, अलग-अलग अनुभव। कुत्तों की ही बात ले लो। भाई, भोपाल में रहने वालों ने तो भोपाल के ही कुत्ते देखे होंगे ना और जो हरदा में रहते हैं उन्होंने हरदा के। वैसे तो भोपाल और हरदा में भी अलग-अलग बच्चों ने अलग-अलग कुत्ते ही देखे होंगे। क्या सभी कुत्ते एक जैसे होते हैं? किसी ना किसी रूप में होने तो चाहिए ही, नहीं तो हम एक-दूसरे की बात कैसे समझ पाते। तो क्या यह मान लें कि हर शब्द का एक ही अर्थ होता है? और सबके दिमाग में उसकी एक ही छवि होती है? और यह छवि कभी बदलती ही नहीं।

ऐसा तो सम्भव नहीं क्योंकि शब्दों के अर्थ तो अक्सर बदलते रहते हैं। यह भी देखा गया है कि एक ही शब्द के अलग-अलग समाजों में अलग-अलग मतलब होते हैं। शब्द कोई अर्थ लेकर तो पैदा होते नहीं। हम ही लोग नए शब्द बनाते हैं और उन्हें नए अर्थ देते हैं। "माउस" शब्द को ही ले लो। जब हम बच्चे थे तो अँग्रेज़ी पढ़ते समय बताया जाता था कि माउस यानी चूहा, अब तो हर बच्चा माउस बोलता है लेकिन उसका अर्थ चूहा ही हो यह ज़रूरी नहीं। जब हम कम्प्यूटर के माउस को माउस कहते हैं तो शायद चूहे की बात सोचते भी नहीं। क्या मालूम, कुछ लोग शायद सोचते हों!

जब हम कहते हैं कि "धोबी का कुत्ता ना घर का ना घाट का", तो यहाँ "कुत्ते" का क्या अर्थ है? आखिर वह कौन-सी बात है जो कुत्ते को बिल्ली से अलग करती है। दोनों की चार टाँगें, दो कान, दो आँखें आदि हैं, हाँ, कुत्ते शायद थोड़े बड़े होते हैं। पर छोटे कुत्तों और बड़ी बिल्लियों की कोई कमी नहीं। लेकिन कुत्ता ही बिल्ली के पीछे भागता है ना कि बिल्ली कुत्ते के पीछे। बिल्ली तो चूहे के पीछे भागती है ना। (कम्प्यूटर वाले माउस के पीछे नहीं।) और फिर कुत्ता रास्ता काट जाए तो कोई बात नहीं, बिल्ली रास्ता काट जाए तो सबको लगता है खुदा जाने क्या होने वाला है! होता तो वास्तव में कुछ भी नहीं। हर रास्ता किसी ना किसी बिल्ली का काटा हुआ तो होता ही है!

आखिर जब हम कुत्ता कहते हैं तो हमारे दिमाग में कैसी छवि होती है, खा रहा कुत्ता, सोया कुत्ता, सूँघता कुत्ता, पेशाब करता कुत्ता, बिल्ली के पीछे भागता कुत्ता..... बहुत कठिन सवाल है भाई। कौन जाने दिमाग में क्या-क्या होता है? लेकिन एक बात तो साफ है कि कुत्ते की एक अमूर्त छवि हमारे दिमाग में होती है – उसका कुछ हिस्सा व्यक्तिगत होता है और कुछ साँझा। हर बार नया कुत्ता देखते हैं और हर बार उसे कुत्ता ही कहते हैं!